Doc-2
हिस्ट्री (H) P-III

परवर्ती तुगलक सुल्तान

फिरोजशाह तुगलक के पश्चात भी गद्दी की लड़ाई जारी रही। इसी संघर्ष ने इतिहास के पन्नों को खून से रंग डाला। फिरोजशाह तुगलक के बाद उसका पौत्र गयासुद्दीन तुगलक द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठा किन्तु भितरघात ने सन 1389 ई० में उसकी गर्दन धड़ से अलग कर दी। यद्यपि अबूबक्र, मुहम्मदशाह और अलाउद्दीन सिकन्दरशाह आदि गद्दी पर बैठे, परन्तु शासन काबिलियत से चलता है न कि नाम से। ये लोग केवल प्रच्छायां बनकर रह गए। 1395 मे नसीरुद्दीन ने राज्य संभाला और 1412 तक तुगलक वंश के अंतिम शासक के रूप में राज किया।

नसीरुद्दीन के साथ सब कुछ ठीक नहीं था। मध्य एशिया के महान मंगोल के सेनानायक तैमूर के भयावह आक्रमण ने नसीर के शासन की चूल हिला डाली। तैमूर ने जो हत्या और लूट का जो नंगा नाच दिखाया वह किसी से छिपा नहीं है। दिल्ली की जनता पल-पल मृत्यु को अपने समक्ष महातांडव करते देखती। दिल्ली की जनता को परवर्ती तुगलक जैसे सुल्तानों जैसे निकम्मों एवं अयोग्य शासकों को बर्दाश्त करने की कीमत अपना लहू देकर चुकानी पड़ी। तैमूर ने 1399 में दिल्ली से चला गया परन्तु उसने भारत पर विपत्तियों और कष्टों का जो पहाड़ ढाया था, ऐसी भयानक दुर्दशा केवल मात्र का एक आक्रमण के दौरान किसी भी विदेशी आक्रमणकारी द्वारा कभी भी नहीं की गई थी।

तैमूर के भयावह आक्रमण ने तुगलक –

P-T0

PAGE NO :

DATE :

साम्राज्य के कफन में आखिरी कील ठोक दी। दिल्ली सल्तनत का विघटन प्रान्तीय राजवंशों के उदय का कारण बना। सल्तनत के अन्तिम दो राजवंश सैयद वंश और लोदी वंश प्रान्तीय राजवंशों से अधिक कमजोर थे।